ORIGINAL RESEARCH PAPER

Arts

KEY WORDS: उच्च शिक्षा, विश्वविद्यालय, संगीत, पाठ्यक्रम, चुनौती...

उच्च शिक्षा एवं संगीत पाठ्यक्रम: चुनौतियां, समस्या, विभिन्न आयाम एवं निराकरण

डॉ. राजेश केलकर

विभागाध्यक्ष (कंठ्य संगीत) फेकल्टी ऑफ परफ़ार्मिंग आर्ट्स, (सेनेट एवं सिंडीकेट सदस्य) महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा.

ABSTRACT

संगीत के संस्थागत शिक्षा के संदर्भ में मध्यकाल में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती। पारंपारिक गुरुकुल में संगीत एक हिस्सा जरूर रहा। बड़ौदा में "छोकराओनी गायन शाला" के रूप में सन १८८६ में संस्थागत शिक्षा कि तालिम कि शुरुआत भारत में सर्वप्रथम हुई। तत्पश्चात पं विष्णु नारायण भातखण्डे के प्रयास से पद्धतिबद्ध पाठ्यक्रम आधारित संगीत शिक्षा कि शुरुआत एक बीज के रूप में हुई। वर्तमान समय तक इसका अनेकों संस्थाओं, कॉलेज एवं विश्वविद्यालय रूपी वृक्षों के घने वनों में परिवर्तन हुआ है। हर बार राग संगीत ही केंद्र में रहा है। परंतु सांप्रत में संगीत के अनेक आयाम सामने आए है। मंच प्रयोग केन्द्रित, शास्त्र केन्द्रित व्यवसाय केन्द्रित अनेक संभावनाएं संगीत शिक्षा से निर्माण हुई है। आजीविका के लिए नए मार्ग अवश्य खुले है परंतु पाठ्यक्रम से तालमेल नहीं है। सृजनात्मकता कि प्रेरणा के बदले अधिक से अधिक गुण कैसे मिले, ऐसी व्यवस्था में परिवर्तन कि आवश्यकता, उनके समाधान और संभावनाओं कि ओर प्रस्तुत लेखन द्वारा निर्देशित किया गया है।

समावेशन एवं उद्देश्य:

भारतीय संगीत के संदर्भ में हमेशा 'मार्गी' (परिष्कृत-sophisticated) और 'देशी' (अपरिष्कृत -unsophisticated) संगीत इस प्रकार कि दो धाराएँ रही है। राग संगीत 'मार्गी' प्रवाह का हिस्सा रहा है। मार्गी संगीत कि शिक्षा गुरुकुल पद्धति में अविभाज्य अंग रही है। परंतु गत चारसौ वर्ष में इसकि किसी शैक्षिक संस्थागत पद्धतिबद्ध शिक्षा परंपरा रही हो ऐसा ज्ञात नहीं है। हालाकि इस में कोई संदेह नहीं कि अनेकानेक विद्वानों ने उस समय के प्रचलित संगीत तो शास्त्रांकित किया और यह परंपरा अभी भी जारी है। आधुनिक भारतीय राग संगीत के संदर्भ में उसे शास्त्राधार देकर उसे सम्मान देने का कार्य उन्नीसवीं शती में राजा सौरिन्द्रमोहन, युवा नरेंद्रनाथ दत्त (स्वामी विवेकानंद), बड़ौदा के प्रो मौलबख्श और उनके नाती हज़रत सूफी इनायत खान, डाहयालाल शिवराम जैसे कई विद्वानों ने किया। हमारे संगीत तो आदिम और ऊटपटांग माननेवाले ब्रिटिश शासकों को यह एक प्रकार का तमाचा ही था। किसी भी विषय में संस्थागत शिक्षा प्रणाली के लिए मूलभूत आवश्यकता है क्रमशः शास्त्रबद्ध शिक्षा प्रणाली (pedagogy) और उससे संबन्धित साहित्य। प्रो मौलबख्श ने बड़ौदा कि संगीत पाठशाला के लिए पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया। बाद में पं विष्णु दिगंबर पलुसकर और विशेषतः पं विष्णु नारायण भातखण्डे ने अत्यंत उन्नत और विकसित पाठ्यक्रम बनाया जिसे सर्वप्रथम बड़ौदा और बाद में ग्वालियर, लखनऊ आदि शहरों मे लागू किया गया। आज यह पाठ्यक्रम न केवल भारत अपितु सारे विश्व कि संगीत शिक्षा संस्थाओं में अभिन्न तथा अनिवार्य तथा आधारभूत माना गया है। केंद्र में शास्त्रीय राग संगीत ही है जिसे इन संस्थाओं, कॉलेजो एवं विश्वविद्यालयों मे सिखाया जा रहा है। शौकिया संगीतकार पैदा करने से ले कर सुशिक्षित संगीत ज्ञाता और कलाकार पैदा करने के उद्देश्य से विभिन्न संस्थानों में पाठ्यक्रम एवं व्यवस्थाएं उपलब्ध की गयी है। इनमे कुछ बेहद व्यवसायी, कुछ सरकार के अनुदान से चलनेवाली, कॉर्पोरेट द्वारा प्रायोजित, तो कुछ सेवाभवी संस्थाओं द्वारा चलाई जा रही है। कालानुसार वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति के चरमोत्कर्ष के समय उच्च शिक्षा में पाठ्यक्रम को विभिन्न दिशाओं में वर्गीकृत करना आवश्यक हो गया है। बेहद तीव्र गति से बढ़ने वाले समय के साथ बढती चुनौतियों के साथ किस प्रकार हम कदम मिला कर उनका निराकरण किस प्रकार हो इस पर प्रकाश डालने का प्रयास इस लेखन में किया गया है।

स्वातंत्र्यपूर्व संगीत शिक्षा संस्थान:

बड़ौदा में प्रो मौलबख्श और उस्ताद फैझ मोहम्मद खाँसाहेब कि संस्थाएं दो अलग अलग उद्देश्यसे अस्तित्व में आयी। एक 'कानसेन' पैदा करने के लिए तो दूसरी 'तानसेन'। प्रो मौलबख्श कि गायनशाला द्वारा असंख्य संगीत के जानकार पैदा होने लगे तो ऊ फैझ मुहम्मद खान कि शाला में कुछ तैयार गायक। गायनाचार्य पं भास्करबुआ बखले एक प्रमुख नाम कह सकते है। पं पलुसकर जी ने गवैये पैदा करने के लिए लाहोर में गंधर्व महाविद्यालय कि स्थापना की और बाद में तैयार किए गए शिष्यों को ख्रिस्ति मिशनरियों कि तरह अलग अलग शहरों में भेजकर संगीत का प्रचार करने के लिए भेजा। कुछ हद तक यह प्रयोग सफल रहा। दूसरी तरफ पं भातखण्डे जी के प्रयासों से बड़ौदा, ग्वालियर, लखनौ में शिक्षा संस्थान खुले जहाँ पर उच्च कोटि के जानकार गायक, शिक्षक, शास्त्रकार पैदा करने के प्रयास हुए, जो कुछ हद तक सफल भी हुए। उसी तर्ज़ पर आगे चलकर स्वातंत्र्योत्तर काल में भारतभर में कॉलेज और शिक्षा संस्थानों में पाठ्यक्रम आधारित बेचलर्स, मास्टर्स और पीएचडी तक के अभ्यास शुरू हुए। एक प्रकार से संगीत शिक्षा जगत में क्रान्ति ही आयी।

सांप्रत विश्वविद्यालयीन संगीत शिक्षा और उद्देश्य:

स्वातंत्र्योत्तर काल में संगीत विषय के प्रति रुचि, सम्मान बढ़ने के कारण अनेक कॉलेज, रंगमंच कला को समर्पित स्वतंत्र विश्वविद्यालय तथा अन्य विद्यालयों में भी संगीत विषय के रूप में शामिल किया गया है। आज देश के करीब सभी राज्यों मे संगीत विषय में यूनिवर्सिटी कि डिग्री पाना संभव हुआ है। किसी भी अन्य विद्याशाखा के बराबर इसकी डिग्री का मूल्य माना जाता है। फलतः स्पर्धात्मक परीक्षाओं के माध्यम से सरकारी नौकरियाँ, स्कूलों इत्यादि में आजीविका का प्रमाण बढ़ गया है। चोईस बेस्ड क्रेडिट सिस्टीम के कारण अन्य विद्याशाखा के विद्यार्थी भी संगीत सीख पा रहे है। विश्वविद्यालयों में अंडर ग्रेज्युएट स्तर पर संगीत विषय में दो प्रकार से डिग्री मिलती है। १) प्रमुख विषय और उससे संबन्धित विषय के साथ साथ संगीत भी एक विषय के रूप में ले कर २) संगीत प्रमुख विषय के रूप में और साथ साथ उसकी विस्तृत थ्योरी। कुल मिलाकर संगीत शिक्षा केंद्र स्थान पर रहती है। अगर सारी शिक्षा व्यवस्था तथा पाठ्यक्रम को गौर से देखे तो पता चलेगा कि इस में बेहद ही कम संभावना है कि कोई कलाकार बन सके। अधिक से अधिक कोई 'कानसेन' या जानकार बन सकता है, पर कलाकार नहीं। क्या डिग्री पाने का यही उद्देश्य हो? परंपरा में जहाँ एक राग सीखने के लिए जहाँ प्रतिभाशाली विद्यार्थी को गुरुमुख से सीखने में महीनों लगते है वहाँ दूसरी ओर संगीत मे सामान्य समझ वाले किसी भी विद्यार्थि को समूह में बैठकर एक वर्ष में दसों राग सीखना संभव है? क्या समान्य कौशल भी प्राप्त कर सकता है? मान लो सीख भी ले तो कलाकार बनने कि योग्यता प्राप्त कर सकता है? क्या यह शिक्षा सचमुच व्यवसायलक्षी है? इन सभी प्रश्नों के उत्तर करीब करीब 'नही' है। अर्थात अब यह नितांत आवश्यक है की वर्तमान संगीत शिक्षा के पाठ्यक्रम में पुनर्विचार और नए आयाम जोड़े जाने चाहिए।

सांप्रत विश्वविद्यालयीन संगीत शिक्षा एवं उद्देश्य:

विश्वविद्यालयीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य प्रज्ञा और बोध (Wisdom & Knowledge) होना सर्वोपरि है पर वह अंततोगत्वा आजीविका का सक्षम माध्यम बने यह भी आवश्यक है। वर्तमान विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रम पर ध्यान दें तो ज्ञात होता है कि किसी विशिष्ट उद्देश्य कि ओर अग्रेसर होना चाहनेवाला विद्यार्थि अनावश्यक पढ़ाई के बोझ तले दब जाता है और अंत में भविष्य के मामले में चेहरे के सामने प्रश्नचिह्न के साथ बाहर निकलता है। संगीत के विश्वविद्यालयों में दिलचस्पी, योग्यता के आधार पर संगीत के विशिष्ट प्रवाह में पढ़ाई कि जाए तो सार्थक हो सकती है। अर्थात उद्देश्य स्पष्ट हो तो पढ़ाई में श्रेयस्कर होगी। संगीत

शिक्षा में तीन शाखाओं में और ढांचे में विद्यार्थियों के लिए प्रमुखतः उद्देश्यों के तीन प्रवाह ध्यान में रखकर संगीत शिक्षा का आयोजन सार्थक होगा।

१) मंचन केन्द्रित पाठ्यक्रम (कलाकार बनने के लिए):

इसका पूर्ण लक्ष्य कलाकार पैदा करना होगा। जिसमें राग, लय-ताल, बन्दिशों के बारे में विस्तृत जानकारी घरानेदार अंदाज में विश्वविद्यालय के माध्यम से दी जानी आवश्यक है विद्यार्थी कि योग्यता, झुकाव इत्यादि के आधारित इन तीन प्रवाहों में विद्यार्थियों को विभाजित कर उन्हें प्रवेश दिया जा सकता है।। इसमें संक्षेप में कुछ निम्न बिन्दुओं की तरफ ध्यान दिया जा सकता है-

i) प्रयोगपक्षीय प्रवाह में विद्यार्थी को सर्जनात्मकता का उद्देश्य सामने रख कर परंपरागत संगीत विद्या का ज्ञान दिया जाना चाहिए।
ii) शास्त्रीय रागदारी संगीत, उपशास्त्रीय संगीत और सुगम इन तीन प्रकारों का सम्यक ज्ञान दिया जाना चाहिए और रागदारी संगीत का ही आधार रखकर विद्यार्थी को किसी एक प्रकार में अपनी रुचि के अनुसार अग्रेसर होने कि सुविधा मिलनी चाहिए।
iii) शिक्षा में आवश्यकतानुरूप संसाधन, रिकार्डिंग संग्रह, गायन-वादन अवसर मुहैया किए जाय और उसे पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाना चाहिए।
iv) मंच प्रदर्शन यह प्रमुख लक्ष्य रखकर ही पाठ्यक्रम गठन होना चाहिए।

आईटीसी संगीत रिसर्च अकादमी कोलकाता एवं गंगुबाई हंगल गुरुकुल, हुबली इसी उद्देश्य से कार्य करती है।

२) व्यवसाय केन्द्रित पाठ्यक्रम (शिक्षक या अन्य नौकरियों के लिए):

व्यवसाय केन्द्रित पाठ्यक्रम का लक्ष्य सांगीतिक कौशल के संबंध में है। संगीत के प्रायोगिक के साथ साथ शास्त्र कि समान जानकारी रखकर पूर्णतः व्यवसाय केन्द्रित होने पर ज़ोर दिया जा सकता है।

i) संगीत के माध्यम से विविध विविध रोजगार जैसे कि, शिक्षक, रेडियो-टीवी जैसी व्यावसायिक नौकरिया, ट्यूशन, स्टुडियो संबन्धित रिकार्डिंग, एडिटिंग, मिक्सिंग, सम्पूर्ण निर्मिति (total production), वाद्य निर्मिति, वाद्य दुरुस्ती,
ii) विभिन्न विद्या शाखाओं के साथ सहभागिता रखकर आजीविका कि नयी संभावनाएं पैदा हो सकती है। संगीत और मेनेजमेंट (विभिन्न आयोजनों के लिए), संगीत और अकोस्टिक्स (एप्लाइड फिसिक्स), संगीत रिकार्डिंग और प्रोडक्शन (ध्वनि अभियांत्रिकी), संगीत चिकित्सा (मेडिकल साइंस), संगीत विवेचक, गीत व संगीत लेखन (साहित्य), रेडियो-टीवी जोकी (साहित्य, नाट्य)
iii) इन शाखाओं के साथ सहयोग करने से पढ़ाई के दौरान जो क्रेडिट विद्यार्थियों को अर्जित करनी है तथा शिक्षकों को जो कार्यभार (workload) वहन करना है उसका आयोजन उन उन विद्याशाखाओं के साथ मिलकर किया जा सकता है।
iv) चोईस बेस्ड क्रेडिट सिस्टेम में किसी और विद्याशाखा के विद्यार्थी को संगीत के किसी विशिष्ट पहलू का अभ्यास करना हो तो वह भी संभव है।
v) विश्वविद्यालयों में संगीत के साथ अन्य विद्याशाखाएं - मानविकी (Humanities), गणित, विज्ञान, समाजविज्ञान, समाजसेवा, भाषाविज्ञान इत्यादि को जोड़कर इंटीग्रेटेड पाठ्यक्रम बनाया जा सकता है कि जिससे शिक्षा के स्तर को काफी ऊंचा उठाया जा सकता है। अन्यान्य विद्याशाखा के देश विदेश के विध्यार्थी आकर्षित हो सकते है और आजीविका के नए मार्ग खुल सकते है।

३) संगीतशास्त्र केन्द्रित पाठ्यक्रम (लेखन और अनुसंधान कार्य के लिए):

यह संगीत की पूर्णतः अकादमिक पढ़ाई से संबन्धित है। जिसमें प्रायोगिक पक्ष की तुलना में प्रलेखन (documentation), अनुसंधान (research), विश्लेषण इत्यादि का महत्व अधिक है। प्रचलित कलापरम्परा को शब्दांकित करने का श्रेष्ठ काम संगीतशास्त्र (Musicology) करता है। इससे कला का प्रमाणीकरण होने में मदद मिलती है। देश में भारतीय राग संगीत में इस शाखा केन्द्रित स्वतंत्र पाठ्यक्रम कि बहुत कमी है। लंदन का 'स्कूल ऑफ आफ्रिकन अँड ओरिएंटल स्टडीज़' या रोटरडेम का 'कोडार्ट्स कोन्जरवेटोरियम' इस मामले में आदर्श स्थान है।

i) संगीतशास्त्र के द्वारा भारतीय संगीत में अनुसंधान पर ज़ोर दिया जा सकता है। सांख्यिकी, शिक्षा विभाग ई॰ से जुड़ कर मात्रात्मक और इतिहास, संस्कृति इत्यादि क्षेत्रों के माध्यम से गुणात्मक अनुसंधान को गति मिल सकती है। भारतीय संगीत में अनुसंधान अभी भी बाल्यावस्था में है।
ii) संगीतशास्त्र में वेदकाल से लेकर गयी शताब्दी तक का ऐतिहासिक, संस्कृतिक, दार्शनिक संगिताध्ययन हो सकता है। इसके अलावा संगीतशास्त्र से जुड़ा हुए नए शिक्षाक्षेत्र , सौंदर्यात्मक, पुरातत्व, मनुष्यजाति विज्ञान, cultural anthropology, चिकित्साविज्ञान के Physiology, neuroscience, भौतिकी से Acoustics, विज्ञान से Computer, information sciences, गणित इत्यादि कई विषयों को लागू किया जा सकता है। जिससे अंतःविषयक अनुसंधान बढ़ सकता है।
iii) इन विषयों को पढ़ने पढ़ाने के लिए उन विषयों के अध्यापकों का आदान प्रदान हो सकता है।
iv) संगीत शास्त्रकार को अध्यापन, रिसर्च इत्यादि में सम्मान का स्थान मिल सकता है। विश्लेषण एवं लेखन द्वारा समाज को संगीत में सुशिक्षित करने का भी अवसर मिल सकता है। संगीत में समालोचना के क्षेत्र में नए आयाम खुल सकते है।

कुल मिलाकर अब बरसों चलती आयी शिक्षापद्धति और पाठ्यक्रम में समय के साथ चलने के लिए बदलाव अत्यन्त आवश्यक है। विशुद्ध ज्ञान और रोजगार दोनों पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है।

यह परिवर्तन कार्यान्वित करने के लिए सरकार, कॉर्पोरेट इत्यादि से सहयोग अत्यंत आवश्यक है। जो भी शिक्षकगण कार्यरत है उन्हें शिक्षित कर के उन के द्वारा विद्यार्थियों को तयार करवाना होगा। पाठ्यक्रम का निश्चित उद्देश्य प्रेरित एक ऐसा आदर्श स्वरूप हो जो स्थानिक, प्रांतीय, वैश्विक विकास कि आवश्यकता पूर्ति के लिए प्रासंगिक एवं सहायक हो। स्थल, काल और मान के अनुसार परिवर्तन कि संभावना और लचिलापन भी हो।

उपसंहार: संगीत निश्चित ही जीवन के अनेक शिक्षाक्षेत्रों को प्रभावित करती है। संगीत से कौशल्य का विकास, मनोप्रेरणा, ज्ञानप्राप्ति, संवेदना, भावात्मक पहलू प्रभावित होते है जो व्यक्ति को मनुष्यत्व कि ओर अग्रेसर करता है जो अंततोगत्वा समाज और राष्ट्र के लिए कल्याणकारक होता है। संगीत शिक्षा को विश्वविद्यालय स्तर पर गंभीरता से और व्यावसायिक दृष्टिकोण से लागू करना आवश्यक है। संगीत और अन्य रंगमच कलाओं को प्रोत्साहन देने हेतु शालेय स्तर से लेकर अधिक विश्वविद्यालय खोलकर प्रोत्साहन देने की तीव्र आवश्यकता है। संगीत कला अपनी प्रसिद्धि की चरम सीमा पर है। केवल संभावित प्रतिभाशाली गायक विद्यार्थी नहीं परन्तु इस कला से जुड़े अनेक आयामों को (कौशल केन्द्रित) पाठ्यक्रम में समाविष्ट कर समाज के व्यापक वर्ग को इस कला के अभ्यास की और आकर्षित किया जा सकता है। इससे रोजगारी के भी अवसर निश्चित रूप से निर्माण होंगे और एक रसिक, कलात्मक, शांतिप्रिय सुदृढ़ समाज निर्मिति कि दिशा में सफल यात्रा शुरू होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1) Syllabus of all major Universities in India: MS University of Baroda, Benaras Hindu University, University of Mumbai, IKSVV Khairagarh, GNDU Amritsar, Panjab University, Allahabad University.
2) चींचोरे, प्रभाकर, पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे स्मृति ग्रंथ, इंदिराकला विश्वविद्यालय, खैरागढ़.
3) Brackett, David (1995). Interpreting Popular Music. ISBN 0-520-22541-4.
4) Nicholas COOK, "What is Musicology?", BBC Music Magazine 7 (May, 1999), 31-3
5) Yudkin, J. (2008). Understanding Music (p. 4). Upper Saddle River, NJ:Pearson/Prentice Hall
6) Higgins, Lee, Community Music: In Theory and in Practice (Oxford University Press, 2012).